जीवन बुलबुले की तरह है। बुलबुले का अस्तित्व कुछ पल के लिए होता है। ऐसेही जीवन है। अनंत की तुलना में जीवन काल एक पल के बराबर भी नही है।

कोई नहीं जानता कि बुलबुला कब फट जाएगा। ऐसे ही जिंदगी कब खत्म होगी किस को पता? एक सेकेंड के अंतराल के लिए भी जीवन का कोई भरोसा नहीं दे सकता। जैसे बुलबुला क्षणभंगुर होता है, वैसेही यह जीवन क्षणभंगुर है। इसकी कोई गारंटी नही दे सकता। मृत्यु कब दस्तक देगी, पता नही। मृत्यु कभी भी आपकी पूर्व अनुमती ले कर नहीं आती है। इसलिए आध्यात्मिक क्षेत्र में उधार नही करना है। करेंगे करेंगे करते करते तो अनंत जन्म बीत गये। अनंत बार भयंकर दुःख एवं यातनाएँ सहन करनी पडी। लेकिन भगवान की भक्ति में हमेशा उधार किया। अब ऐसा नहीं करना है। आध्यात्मिक मार्ग चुनकर अपने जीवन काो सफल बनाना है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जीवन यात्रा का निर्णय कैसे किया जाता है?

जैसे सूचनाओं के पैकेट इंटरनेट पर उन पर लिखे गंतव्य पते के अनुसार यात्रा करते हैं, वैसे ही आत्मा को भी मन में पैदा होने वाले कामों के अनुसार यात्रा करनी पड़ती है।

कर्मों के अनुसार, गंतव्य में परिवर्तन होता है। आत्मा को स्वर्ग जाना है कि ईश्वर के निवास स्थान है या पृथ्वी पर मानव के रूप में या अन्य जीवित प्राणी या पौधे के रूप में जन्म लेना है, इसका निर्णय हमारे कर्म करते है।

पैकेट अपनी खुद की यात्रा नहीं कर सकते हैं, उन्हें संबंधित हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर के समर्थन की आवश्यकता है और निश्चित रूप से बिजली की जरूरत है। इसी तरह भगवान की उपस्थिति कर्मों का प्रभाव देने के लिए आवश्यक है ताकि आत्मा अपने कर्मों के अनुसार मार्ग का अनुसरण करे और दुखों और सुखों का अनुभव करे, अर्थात सुख और दुख पूर्व कर्मों का प्रभाव है।

इस प्रकार, हमारे कर्मों और अनुभवों के बीच कारण और प्रभाव संबंध है जिसका नियंत्रण भगवान करते है। इसलिए, भगवान को नियंत्रक है और जीव नियंत्रित है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132